आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके
बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-115 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अक्टूबर 2023 | मूल्य - 5 रूपए

रैली माध्यम से

सड़क और कामकाजी बच्चों ने वायु प्रदूषण से बचाव के तरीकों पर जनता को जागरूक किया

रिपोर्टर साबिर सरिता हंसराज काजल आदि

वायु प्रदूषण की गंभीर स्थिति को देखकर बालकनामा पत्रकारों ने सड़क एवं कामकाजी बच्चों से वर्तमान में बढ़ते वायु प्रदुषण को लेकर सड़क एवं कामकाजी बच्चों की स्थिति का जायजा लिया और जाना कि वे किन-किन परेशानियों से जूझ रहे हैं? जब बालकनामा पत्रकारों ने विभिन्न स्थानों पर दौरा किया तो सड़क पर रहने वाले व कामकाज करने वाले बच्चों ने वायु प्रदूषण से होने वाली अपनी समस्याओं को बताया। बालकनामा के पत्रकार वायु प्रदूषण से संबंधित बच्चों की राय लेने के लिए एक ऐसी बस्ती में पहुंचे जहां पर अधिकांशतः कबाड़ा छाँटने व कबाड़ा बीनने का कार्य होता है। झुग्गी बस्ती में रहने वाले 10 वर्षीय बालक ने बताया की हम सभी बच्चे झुग्गी बस्ती में रहते हैं और इस झुग्गी बस्ती में अधिकतर कबाड़ बीनने का और छाँटने का ही काम होता है।

झुग्गी बस्ती में ज्यादातर लोग पैसे कमाने की जद्दोजहद में सुबह से ही कबाड़ बीनने के लिए निकल जाते हैं और बस्ती में रहने वाले बच्चे भी उनके अभिभावकों के साथ कबाड़ बीनने के लिए उनके साथ जाते हैं इसके अलावा कुछ बच्चे स्वयं से अकेले भी जाते हैं। बालक ने बताया जितने भी लोग कबाड़ बीन कर आते हैं वे अपने कबाड़ में गत्ता, प्लास्टिक, लोहा, तार आदि एकत्रित करके लेकर आते हैं कई बार प्लास्टिक के मोटे केबल में तांबे के बारीक तार छुपे होते हैं तो इस प्रकार के केबल या तारों को छीलना पड़ता है और जो लोग तारों को नहीं छीलते हैं तो वे तार को आग में जला देते हैं परिणामस्वरूप उस आग में से भांति-भांति का विषैला काला धुँआ निकलता है और वह आसमान में फैलता है फलस्वरूप प्रदूषण होने का खतरा रहता है और इस प्रकार ये प्रदुषण को बढ़ावा देता है जब तार पूर्णतः जल जाता है तो वह तांबे का तार और तांबा अलग-अलग हो जाता है और इस प्रकार प्राप्त तांबे को साफ कर अलग से बेचा जाता है।

पश्चिम दिल्ली में रहने वाली 12 वर्षीय बालिका ने प्रदूषण में होने वाली समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए कि यहां दिन- प्रतिदिन प्रदुषण बढ़ता ही जा रहा है और इसकी अधिकता के कारण सड़क पर कुछ साफ नजर नहीं आता अपितु धुंधला-धुंधला दिखाई देने लगता है। जब हम सुबह के समय खिलौने आदि बेचने के लिए निकलते हैं तो सड़क पर गलियों में इतना प्रदूषण फैला रहता है कि कुछ नजर नहीं आता और आंखों से स्वतः पानी गिरता है व आंखों में दर्द होने लगता है। इसके अलावा

समस्या यह भी आती है कि जब गलियों में व सड़क पर इतना धुंधला-धुंधला हो जाता है कि गलियों में गिरे-पड़े तार भी नजर नहीं आते वस्तुतः कई बार उन तारों में लिपटकर गिरने का भी खतरा रहता है। जब हम सुबह के समय सड़क पर खिलौने आदि बेचने के लिए जाते हैं तो देखते हैं की कई प्रकार के वाहन चालक काफी तेज गाड़ी चलाते हैं और आपको तो यह ज्ञात ही होगा कि गाड़ी, वाहन या साधन इत्यादि के कारण भी प्रदूषण बढ़ने का खतरा रहता है। कई प्रकार के दमकल वाहनों से निकलने वाले विषैले धुंएं और चलती हवा के कारण प्रदुषण और बढ़ता चला जाता है पर हमें इन वाहनोंऔर तरह-तरह की हवा चलने के कारण सुबह के समय काफी ठंड का भी सामना करना पड़ता है जिसके कारण हमें कई बार खांसी और जुकाम भी हो जाते हैं।

गुरुग्राम में रह रही 11 वर्षीय बालिका ने बढ़ते प्रदूषण को लेकर बताया कि जैसे-जैसे प्रदूषण बढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे हमें भी प्रदुषण के कारण काफी सारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है हमें कभी-कभी लगता है कि यह तो अभी शुरूआत है पर वाले भविष्य में प्रदूषण की मात्रा बढ़ने की पूर्ण संभावना है क्योंकि प्रदूषण बढ़ने का एक कारण बम-पटाखे जलना भी है। पूरा भारत जानता है 2023 में दिवाली 12 नवंबर को मनाई जा रही है पर अभी से ही धीरे-धीरे बच्चों एवं बड़ों ने मिलकर पटाखे जलाना आरंभ कर दिया है जिससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है की दीपावली पर्व के पश्चात तो इस प्रकार के बम-पटाखों के कारण प्रदूषण की मात्रा में आमूल चूल बढ़ोत्तरी होगी वैसे ही अधिक प्रदूषण होने के कारण सांस लेने में दिक्कत आ रही है पर और यह दिक्कत बढ़ती ही चली जाएगी।

पश्चिम दिल्ली की कई ऐसी झुग्गी बस्तियों में बढ़ते प्रदूषण के बारे में जानने के बाद पता चला की अधिकांशतः स्थानों पर झुग्गी बस्तियों में शौचालय स्थित नहीं है और झुग्गी में रहने वाले सभी बड़े एवं बच्चे खुले स्थानों पर शौच करने के लिए बाध्य हैं। बस्ती में रहने वाली एक 15 वर्षीय बालिका ने बताया, जैसा की प्रदूषण अधिकतर आसपास की होने वाली गंदगी से बढ़ता है ऊपर से लोग खुले में शौच करने जाते हैं जिसके कारण प्रदूषण बढ़ने का खतरा रहता है। क्योंकि इन स्थानों पर शौचालय नहीं बने हुए हैं इस कारण सभी को खुले में शौच करने के लिए जाना पड़ता है और गंदगी एवं बदबू इत्यादि को सहन भी करना पड़ता है परिणामतः बस्ती में रहने वाले बच्चे अक्सर गंदगी से निकलने वाले प्रदूषण से बीमार पड़ जाते हैं।

नोएडा सेक्टर 49 में रहने वाले बालक ने बताया की हम जिस स्थान पर रहते हैं वहां हमारे घर के बगल में एक बहुत बड़ा नाला स्थित है, नाले में कई गांवों का अपशिष्ट जल आता है और गांव में उपस्थित लोग उसमें कूड़ा-करकट भी फेंकते हैं जिसके कारण नाले का पानी काफी मलिन हो जाता है परिणाम स्वरुप उसमें कई प्रकार के कीड़े-मकोड़े, मच्छर इत्यादि जीव पनपन लगते हैं और वे सभी हमारे लिए बहुत ही घातक साबित होते हैं जिसके कारण बच्चे बीमार पड़ रहे हैं अन्ततोगत्वा बच्चों में डेंगू एवं मलेरिया जैसी बीमारियां फैल रही है जिसके पीछे का कारण विभिन्न प्रकार के प्रदूषण ही है।

जब पत्रकार बच्चों से प्रदूषण पर बात कर रहे थे तब एक 17 वर्ष की बालिका ने बताया कि हम झुग्गी बस्ती में अपने माता-पिता के साथ रहते हैं पर जिस स्थान पर हम रहते हैं उस स्थान के आसपास में अधिकांशतः इमारतों का निर्माण चल रहा है जिससे दिन पर दिन सुबह के समय इतना प्रदूषण फैला रहता है और दूर-दूर तक कुछ भी नजर नहीं आता यहां तक की पाँच सौ मीटर की दूरी पर बनी इमारत तक भी नजर नहीं आती। अब आप अंदाजा लगा सकते हैं की कितना तेजी से प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, इन झुग्गियों और इमारतों के आसपास में अधिकतर धुल-माटी उड़ती रहती है जिसके कारण बच्चे चाहकर भी साफ-सुथरे नहीं रह पाते और बढ़ता प्रदूषण और धूल माटी के शिकार हो जाते हैं और इस प्रकार बच्चे अंततः स्वस्थ नहीं रह पाते हैं।

शेष पृष्ठ 2 पर

गैस सिलेंडर फटने से आग की चपेट में आयी 25 झुग्गियां

घर जलकर हुए राख, सदमें में हैं बच्चे

बातुनी रिपोर्टर राज
बालकनामा रिपोर्टर असलम

आज हम आपको एक ऐसी घटना के बारे में बताने जा रहे हैं, जिस घटना से सड़क पर काम करने वाले बच्चों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने ऋटऊ कांटेक्ट पॉइंट का दौरा किया तब पत्रकारों ने कामकाजी बच्चों से बातचीत की।

बातचीत के दौरान बच्चों ने बताया कि भैया कुछ दिन पहले हमारी बस्ती में एक महिला खाना बना रही थी तो खाना बनाते समय अचानक गैस में आग लगने से गैस सिलेंडर फट गया और उससे पूरी झुग्गी में आग लग गई। देखते देखते यह आग तकरीबन 25 झुग्गियों तक फैल गई, जिससे बहुत से परिवारों के घर जल गए। ये बच्चे जहां पर पढ़ाई करने जाते थे उसकी जुग्गी में भी आग लग गई। जिस कारण बच्चे अब पढ़ने के लिए नहीं जा पा रहे। क्योंकि बच्चों की किताबें, उनका स्कूल बैग और उनकी पढ़ाई से संबंधित सारी

चीजे सब जलकर राख हो गई। बच्चों ने बताया कि भैया जब आग लगी थी तब हमने फायर ब्रिगेड वालों को बुलाया था और फायर ब्रिगेड वालों ने एक घंटे में सारी आग पर काबू पा लिया। लेकिन जब वो यहां आते तब तक इतनी देर में सबके घर के सामान, बिस्तर, किताबें, कुर्सी, खाने का सामान, घर में रखे पैसे सब जल गए थे। इस घटना से झुग्गी में रहने वाले बहुत से परिवार निराश होकर टूट गए हैं । बच्चे भी बहुत उदास हैं, क्योंकि उनके पास जो भी पढ़ाई सामान था वह भी जल गया है। आग बुझाने के चक्कर में कुछ लोगों को चोट भी लग गयी है। हमारा पढ़ाई का सेंटर भी जल गया है।अब हम करें तो क्या करें कुछ समझ में नहीं आ रहा है। हम चाहते हैं कि कोई हमारी मदद करें। इस घटना से बच्चे बहुत ज्यादा उदास हैं और बच्चों का पढ़ाई में मन भी नहीं लगता। बच्चे चाहते हैं कि अपनी पढ़ाई दोबारा शुरू करने और उनके भरण पोषण के लिए सरकार उनकी कुछ मदद करे।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

Scanned with OKEN Scanner

सड़क और कामकाजी बच्चों ने किया

स्ट्रीट चाइल्ड क्रिकेट विश्व कप 2023, लैंगिक बाधाओं को पार करके बच्चों के अधिकार और भागीदारी का समर्थन

ब्यूरो रिपोर्ट

स्ट्रीट चाइल्ड यूनाइटेड द्वारा आयोजित स्ट्रीट चाइल्ड क्रिकेट विश्व कप 2023, आईसीसी क्रिकेट विश्व कप 2023 से पहले 23-30 सितंबर 2023 तक चेन्नई में आयोजित किया गया। इस अनूठे टूर्नामेंट का उद्देश्य सड़क पर रहने वाले बच्चों के अधिकारों और कल्याण को बढ़ावा देना है और उन्हें अंतरराष्ट्रीय मंच अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का मौका उपलब्ध कराना है।

स्ट्रीट चाइल्ड क्रिकेट विश्व कप एक शक्तिशाली मंच रहा है क्योंकि इसमे भारत, इंग्लैंड, बुरुंडी, हंग्री, मॉरीशस, बांग्लादेश, नेपाल, रवांडा, बुरुंडी, मैक्सिको, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका आदि सहित 24 देशों की स्ट्रीट चाइल्ड क्रिकेट वर्ल्ड कप टीम ने भाग लिया और कई समाजिक मुद्दों जैसे लैंगिक समानता, बाल अधिकार और भागीदारी के अधिकार की वकालत किया।

विपरीत परिस्थितियों और मुश्किलों का सामना करने वाले ये बच्चे अब क्रिकेट के मैदान पर अपने देश का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और साबित कर रहे हैं कि वे अपनी परिस्थितियों से कहीं बढ़कर हैं।

सामाजिक संस्था चेतना (चाइल्डहुड एनहांसमेंट थ्रू ट्रेनिंग एंड एक्शन) से बच्चों को टीम एस इवेंट में भारत का प्रतिनिधित्व किया। ये सभी बच्चे इस महत्वपूर्ण आयोजन के लिए अथक प्रयास और तैयारी किया। ये बच्चे, जिन्होंने अपने बचपन से ही कई कठिनाइयों का सामना किया है और परिवार को वितीय सहायता प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार कार्यों में शामिल रहे हैं, अब अपने भविष्य को बदलने के लिए क्रिकेट को एक साधन के रूप में उपयोग कर रहे हैं। वे समर्पित प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में लगन से अभ्यास कर रहे हैं, अपने कौशल को निखार रहे हैं और सौहार्द्र का निर्माण कर रहे हैं।

प्रारंभ में दिल्ली के विभिन्न बस्तियों से 40 सड़क और कामकाजी लड़के और लड़कियों की पहचान की गई। एक कठोर चयन प्रक्रिया के बाद, अब हमने 4 लड़कों और 4 लड़कियों के एक अंतिम समूह का चयन किया है, जिसने इस आयोजन में प्रतिनिधित्व किया।

ये युवा प्रतिभागी चेन्नई की यात्रा

पर निकले, जो उन्हें अपने शहर की सीमा से परे ले गयी, और उन्हें पहली बार दुनिया के विभिन्न कोनों से आए लोगों के साथ बातचीत करने का अमूल्य अवसर प्रदान हुआ।

14 वर्षीय फरजाना अपना अनुभाग साझा करते हुए बताती है कि 'हालाँकि मैंने हमेशा अलग-अलग खेल खेलने का आनंद लिया है, लेकिन मैंने कभी क्रिकेट खेल में सक्रिय रूप से भाग नही लिया। मेरी अंतर्निहित धारणा थी कि क्रिकेट मुख्य रूप से पुरुषों के वर्चस्व वाला खेल है। इस धारणा ने मुझे इसे आजमाने से रोक दिया, क्योंकि मुझे अपने आस-पास के लोगों से संभावित उपहास का डर था। इस व्यापक प्रशिक्षण ने न केवल मेरे क्रिकेट कौशल को बढ़ाया है, बल्कि मेरी झिझक को दूर करते हुए आत्मविश्वास और सशक्तिकरण की भावना भी पैदा की है'।

इस रोमांचक अवसर के बारे में बोलते हुए, टीम कप्तान करन बताते है, ''हम स्ट्रीट चाइल्ड क्रिकेट विश्व कप में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए बेहद उत्साहित हैं। क्रिकेट हमारे लिए सिर्फ एक खेल नहीं है; यह गरीबी के चक्र से मुक्त होने का एक तरीका है हम दुनिया को दिखाना चाहते हैं कि चाहे हम कहीं से भी आएं, हमारे पास सफल होने की प्रतिभा और दृढ़ संकल्प है।''

"स्ट्रीट चिल्ड्रेन 'सड़क की गुगली' की तरह हैं, जो सही अवसर मिलने पर अपने जीवन में बहुत मेहनत और सफल होने के लिए तैयार रहते हैं। पिछले तीन महीनों में, हमने 40 में से चुने गए 8 बच्चों के समूह में गहरा परिवर्तन देखा है। वे अपने सहकर्मी समूहों और समुदायों में लीडर के रूप में उभरें है, लैंगिक रूढ़िवादिता को चुनौती देते हुए, प्रतिकूल परिस्थितियों में दृढ संकल्प प्रदर्शित करते हुए और बाधाओं को दूर करने में अटूट साहस का प्रदर्शन करते हुए इस अंतर्राष्ट्रीय मंच अपनी प्रतिभा दिखाने को तैयार हैं।

संजय गुप्ता, संस्थापक चेतना संस्था, सामाजिक संता चाइल्डहुड एनहांसमेंट थ्रू ट्रेनिंग एंड एक्शन, ने इन बच्चों के सपनों का समर्थन और पोषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने बच्चों को इस अंतर्राष्ट्रीय आयोजन की तैयारी में मदद करने के लिए आवश्यक संसाधन, कोचिंग और मार्गदर्शन प्रदान किया है।

रैली माध्यम से सड़क और कामकाजी बच्चों ने वायु प्रदूषण से बचाव के तरीकों पर जनता को जागरूक किया

पृष्ठ 1 का शेष

जब बालकनामा के पत्रकारों ने नोएडा, लखनऊ, दिल्ली, जयपुर और गुरुग्राम आदि स्थानों के बच्चों से इस विषय पर विस्तृत चर्चा की तो अधिकांश बच्चों ने यह बात विशेष रूप से बताई की प्रदूषण अभी बढ़ता ही जा रहा है और अब तो शादी के सीजन भी शुरू हो गए हैं, आजकल वैसे तो शादी में यदि डीजे, ढोल, आदि ना हो तो मजा नहीं आता पर वहीं दूसरी ओर शादी बारात में डीजे इतनी तेजी में बजाए जाते हैं कि आसपास में रहने वाले लोगों को अनेक प्रकार की परेशानियों का सामना तो करना पड़ता ही है पर साथ ही साथ तेज आवाज में डीजे बजाने के कारण ध्वनि प्रदूषण बढ़ने का और अधिक खतरा मंडराता रहता है।

नोएडा में रहने वाले नूर (परिवर्तित नाम) ने बताया जिस गांव में हम रहते हैं जब वहां पर शादी बारात में डीजे आते हैं तो डीजे इतनी तेज आवाज में बजाए जाते हैं जिससे प्रदूषण तो बढ़ता ही बढ़ता है और अधिक तेज आवाज में बजाने से छोटे-छोटे बच्चों को भी दिक्कत होती है। कभी कभी तो डीजे का अत्यधिक बेस होने के कारण आसपास के मकान में जहाँ मरम्मत की आवश्यकता होती है वह भी टूट कर गिरने लगते हैं। अतः हमारा सभी से यह अनुरोध है कि शादी बारात में डीजे ढोल आदि बजाये पर इतनी आवाज में बजाये ताकि आसपास में रहने वाले लोगों को दिक्कतों का सामना न करना पड़े।

बढ़ते प्रदूषण पर और विस्तार से जानने हेतु पत्रकार जयपुर के उस इलाके में पहुंचे जहां पर अधिकतर फैक्ट्री स्थित है कुछ बच्चों से बात कि तो 14 वर्षीय बालिका ने बताया की इस गांव के बगल में फैक्ट्रियां ही फैक्ट्रियां हैं और उनके पास में हमारा घर भी उपस्थित है। इन फैक्ट्री में तरह-तरह का काम होता है जैसे गत्तों का काम, बेल्ट बनाने का काम, ब्रेड बनाने का काम, प्लास्टिक का सामान बनाने का काम इत्यादि और यह सब काम मशीन या यंत्रों के द्वारा ही किया जाता है कुछ अपशिष्ट वस्तुओं को इन यंत्रों के माध्यम से जलाया जाता है जिसके फलस्वरुप जहरीला धुंआ इन यंत्रों से निष्कासित होकर हमारे आसपास के वातावरण एवं वायुमंडल में फैल जाता है जिसके कारण चारों ओर बादल नुमा आकृति बन जाती है और इस प्रकार की धुआं निष्कासित होने से लगातार दुर्गंध भी आती रहती है जब फैक्ट्री में से धुआं निकल रहा होता है तो हम लोगों को बाहर निकलना भी काफी मुश्किल हो जाता है जिस कारण हम लोग दो से तीन घंटे तक बाहर नहीं निकलते हैं इस धुएं से बीमार होने का खतरा हमेशा बना रहता है और इसके होने वाले दुष्परिणामों के कारण अधिकांशतः बच्चे इस प्रदूषण के दुष्चक्र में पड़कर बीमार पड़ जाते हैं।

प्रदूषण को लेकर बढ़ते कदम के सदस्यों ने दिल्ली, गुरुग्राम, जयपुर एवं नोएडा में प्रदूषण पर रैली भी निकाली। नोएडा में बढ़ते कदम के सदस्यों ने नन्हे परिंदे वैन में बैठकर सेक्टर 18, सेक्टर 27 एवं सेक्टर 37 आदि स्थानों पर उपस्थित लोगों को संदेश देते हुए कहा कि बढ़ते प्रदूषण को लेकर छोटे-छोटे बच्चों को अधिकतर प्रदूषण का सामना करना पड़ रहा है। हमारा आप सभी से यह अनुरोध है कि आप बेवजह आग जलाने का कार्य न करें, आसपास में नियमित साफ सफाई रखें और सभी आवश्यक रूप से मास्क लगाकर सुरक्षित रहें।

बच्चों की समस्या का निकले हल

सरकार द्वारा चलायी जाने वाली ब्लू बस में निःशुल्क स्कूल जाने की मिले सुविधा

बातूनी रिपोर्टर पवित्रक

आपको पता ही होगा कि सड़क पर काम करने वाले बच्चों को स्कूल जाने का मौका मिले तो बच्चे रोज स्कूल जाएं। इन बच्चों को स्कूल जाना बहुत अच्छा लगता है क्योंकि स्कूल में इन बच्चों को खेलने कूदने के साथ एक समय का भोजन भी दिया जाता है। इसलिए यह बच्चे खुशी-खुशी स्कूल जाते हैं। हम आपको गुरुग्राम बस सेवा के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसे यह बच्चे ब्लू बस के नाम से जानते हैं। इस बस में 12 वर्ष से नीचे की महिला या पुरुष के लिए मुफ्त में सफर करते हैं, इसलिए यह बच्चे इस बस का भरपूर फायदा उठाते हैं। शरुआत में जब यह बस हरियाणा में चली थी तो यह बच्चों के लिए रुक जाती थी। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतते गए, बस ने रुकना बंद कर दिया और जो बच्चे स्कूल जाते थे उनको भी अब बस में नन्ही बैठाते हैं। क्योंकि बस चालक को लगता है कि यह बच्चे पैसे नहीं देते हैं। यह सोचते हैं कि अगर हम बस रोकेंगे तो जो 12 वर्ष के नीचे के बच्चे हैं वह भी इस बस में चढ़ जाएंगे और यह बस भर जाएगी इसलिए अब यह बस नहीं रोकते हैं। अगर गलती से बस स्टैंड पर स्कूल के बच्चे बैठ भी जाते हैं तो बस का कंडक्टर इन बच्चों को डाँटता है और बस में नहीं बैठाते है। बस कंडेक्टर बच्चों से गाली देकर बात करते हैं और कई बार तो इन बच्चों को बस में से धक्का भी दे देते हैं। इससे भी अगर बच्चे नहीं मानते हैं तो उनको मारने की धमकी भी देते हैं। पत्रकार ने बच्चों से कहा कि अगर यह आपको डाँटता है तो आप मत जाओ तो बच्चों ने कहा कि भैया यह बस 12 वर्ष से नीचे के लिए मुफ्त है। इसी कारण हम इस बस पर जाते हैं, लेकिन अब यह बस हमारे लिए रुकती ही नहीं है। जिसके कारण हम स्कूल के लिए लेट हो जाते हैं। अगर पहले की तरह यह बस हमारे लिए रुके तो हम बहुत जल्दी स्कूल पहुँच जाएं। अब हम कई बार स्कूल लेट हो जाते हैं, क्योंकि हमारा घर बहुत दूर है जिसके लिए हमें स्कूल में बहुत डांट लगती है। वहाँ से स्कूल पैदल आना भी हमारे लिए बहुत मुश्किल है, इसलिए हम बस से आते हैं। हमारा सरकार से यही निवेदन है कि वो हमारे स्कूल आने जाने के लिए कुछ योजना निकाले जिससे हम भी स्कूल जा सके।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS
CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.
Child line Number 1098
Police Helpline Number 100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

Scanned with OKEN Scanner

नौकरी के लिए जुझ रहे नाबालिग: अच्छे मेहनताने पर काम करने की तलाश में

बालकनामा रिपोर्टर असलम

हरियाणा के पत्रकार असलम ने जब एम आर टावर की झुग्गियों का दौरा किया, तब पता चला कि कुछ नाबालिग बच्चे काम की तलाश में गलत रास्ता अपना रहे हैं। उनकी उम्र कम होने के कारण कोई उन्हें काम पर नहीं रखता और अगर कोई उन्हें काम पर रख भी लेता है तो वह उन्हें अच्छे पैसे नहीं देता। इसलिए सड़क पर काम करने वाले ये बच्चे अपना दिमाग लगाते हैं और किसी और की आईडी के आधार कार्ड, पैन कार्ड को अपना बताकर काम पर लग जाते हैं।

फिर हमारे बालकनामा पत्रकारों ने उन बच्चों से बात की तो एक बच्चे अमित ने बताया कि भैया एक बार की बात है कि मैं किसी दुकान में काम पर लगा तो उसने पहले मुझे 10000 रूपए महीना बोला, फिर उसके बाद जैसे ही महीना पूरा होने वाला था उसने मुझे कहा कि मैं तुझे 6000 रूपए दूंगा, क्योंकि मेरी उम्र 14 साल है। उसने इसका

फायदा उठाया और मुझे सिर्फ 6000 रूपए दिए। उसके बाद एक मेरा ही दोस्त जो की कपड़े की दुकान में किसी और की आईडी से काम कर रहा था उसे महीने के 14000 रुपए मिलते थे। उसकी उम्र मेरे जितनी ही थी। इसलिए मैं भी दूसरे की आईडी लगाकर काम करता हूँ। मैं अपने पड़ोसी का आधार कार्ड दिखाकर काम करता हूं। क्योंकि उनकी शक्ल मेरी शक्ल एक जैसी दिखती है। इसलिए दुकान वाले ने मुझे रख लिया। परंतु जो कस्टमर आते हैं वह कहते हैं कि आपकी उम्र कम है। परंतु मैं उन्हें कहता हूं कि नहीं मेरी उम्र 18 साल से ज्यादा है। देखा जाए तो बच्चों को कम उम्र से ही काम पर लगा दिया जाता है, लेकिन उन्हें अच्छे पैसे नहीं दिए जाते हैं। इसलिए वह लोग दूसरों की आईडी लेकर काम करते हैं और तो और हमारे यहां कुछ बच्चे तो दूसरों की आईडी से जोमैटो, स्विग्गी के द्वारा डिलीवरी देने का काम भी करते हैं और महीने के बहुत अच्छे रुपया कमाते हैं।

कचरे के ढेर से परेशान झुग्गी-झोपड़ी वालों की दर्दनाक कहानी

बातुनी रिपोर्टर इंशा, बालकनामा रिपोर्टर सरिता
बालकनामा रिपोर्टर असलम

झुग्गी में रहने वाले लोगों को बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बच्चों ने बताया कि हमारी झुग्गी के सामने बहुत बड़ा मैदान है, जिसमे लोग आकर कूड़ा फेंकते हैं, जिससे बहुत बदबू आती हैं। इस बदबू से हम परेशान रहते हैं और सांस लेने में भी दिक्कत होती है। आस-पास गन्दगी के कारण डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियां भी बहुत तेजी से हमारी झुग्गी में फैल रही हैं। अगर हम अपनी झुग्गी के मलिक को बोलते हैं तो वह हमारी बातों पर ध्यान नहीं देते हैं। सब वही कचरा फेंकते हैं और जब बारिश आती है तो पूरे में पानी भर जाता है और कचरा बहकर हमारी झुग्गी में घुस जाता है। अगर लोग हमारी झुग्गी के बाहर कचरा ना फेंके तो हम भी स्वस्थ रहे और साफ सुथरी जगह पर भोजन कर पाएं और बिमारियों से भी बच पाएं। बच्चे यही चाहते हैं कि इस समस्या का हल हो क्योंकि यह कचरा जमा होकर एक दिन पहाड़ का रूप ले लेगा और इसका खामियाजा हम बस्तीवालों को भुगतना पड़ेगा। अभी कोई भी इस कचरे को हटाने की कोशिश भी नहीं कर रहा है। नगर निगम वाले लोग इस कचरे को नजर अंदाज कर रहें हैं। हम चाहते हैं कि सरकार इस परेशानी का समाधान करे।

खुद का खर्च, खुद उठाने की इच्छा: विवेक का निर्णय

बातुनी रिपोर्टर विवेक, बालकनामा रिपोर्टर असलम

आज मैं आप सभी को एक ऐसे बच्चों के बारे में बताने जा रहा हूँ जिसने अपनी पढ़ाई किसी कारण छोड़ दी। जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने बादशाहपुर की झुग्गियों का दौरा किया तब पत्रकारों को पता चला कि एक बहुत होनहार बच्चा है, जिसका नाम विवेक है। विवेक 16 वर्ष का है।

जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने विवेक से पूंछा कि आपने अपनी पढ़ाई को क्यों छोड़ दी तो तब विवेक ने बताया कि भैया मैं जब दसवीं में पढ़ता था, तब मेरे घर वालों के पास इतने पैसे नहीं थे कि वह मेरी किताबें खरीद सकें। इसी कारण मुझे पार्ट टाइम काम करना पड़ता था। काम करने के कारण मैं स्कूल भी लेट जाता था और पढ़ाई भी बहुत काम कर पाता था। कई बार मुझे स्कूल में बहुत डाँट पड़ती थी और मेरी क्लास की अध्यापक मुझे बहुत ज्यादा धमकाती और डांटती थी। हमारे स्कूल में छुट्टी करने पर 10 रुपए का फाइन भी होता था। अगर मैं 1 दिन भी छुट्टी करता था तो हमारी कक्षा की अध्यापक हमसे फाइन के पैसे मांगती थी।

एक दिन विवेक के पास पैसे नहीं थे और उसने अपनी माताजी से पैसे मांगे तो उनके पास भी पैसे ना होने के कारण वह बिना पैसे लिए ही स्कूल चला गया। जब अध्यापक ने विवेक को डाटा और कहा कि फाइन के पैसे कहां हैं तो विवेक ने कहा कि हमारे घर में थोड़ी दिक्कत है इसलिए पैसे नहीं लेकर आ पाया। यह सुनकर अध्यापक ने विवेक से कहा कि अगर तुम्हारे पास फाइन भरने के लिए 10 रुपए नहीं है तो स्कूल मत आना। जिसके कारण विवेक अब स्कूल में पढ़ाई नहीं करता और ओपन से पढ़ाई कर रहा है। वह महीने भर पीजी में झाड़ू पोछा लगाने का भी काम करता है। पहले तो विवेक को यह काम करने में बहुत शर्म आती थी। परंतु अध्यापक की बात को याद करते हुए उसे मजबूरी में काम करना पड़ा। लेकिन जैसे दिन बीतते गए विवेक का मन काम में लगता गया और अब विवेक को काम करने में कोई शर्म नहीं आती और वह काम को अच्छे से करता है। विवेक का कहना है कि मैं इन पैसों को जमा करता रहूँगा और ओपन से पढ़ता रहूँगा। मैं अपनी पूरी पढ़ाई का खर्चा खुद उठाऊंगा।

अंकुश: अनाथ होने पर भी उच्च उद्देश्य, गरीब बच्चों के लिए शिक्षक बनने का सपना

बातूनी रिपोर्टर अंकुश
बालकनामा रिपोर्टर असलम

हरियाणा के पत्रकार असलम ने जब एमआर टावर की झुग्गियों का दौरा किया तो पत्रकार को पता चला कि एक बच्चा अनाथ है। जब वह बहुत छोटा था तब उसके पिताजी का कैंसर से निधन हो चुका था। उसकी माताजी भी किसी हादसे में चल बसी। इसी कारण वह बच्चा अनाथ है। इस दुनिया में उस बच्चे का और कोई नहीं है। उस बच्चे की के चाचाजी ने उसको अपने साथ रखा है। जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने उस बच्चे से बातचीत की तो उसने बताया कि भैया मेरा नाम अंकुश है, मैं अपनी चाची के साथ रहता हूँ। मेरी चाची के तीन बच्चे हैं। वह मेरे से छोटे हैं । जब मेरे चाचाजी और चाचीजी काम पर जाते हैं तब मैं इन बच्चों का ध्यान रखता हूँ। मेरे चाचाजी मुझे पढ़ा नहीं पा रहे क्योंकि उनके तीन बच्चे हैं। इसी कारण मैं चेतना एनजीओ में पढ़ने जाता हूँ। जिसमें एक मैडम जी हैं वह मुझे बहुत अच्छा पढ़ाती हैं। उन्हीं के द्वारा आज मैं हिंदी पढ़ना सीख गया हूँ। मेरा सपना है की मैं स्कूल जाऊं। जैसे ही मेरे

चाचा के तीनों बेटे बड़े हो जाएंगे तो मैं भी स्कूल जा पाऊंगा। अभी मेरा इस दुनिया में उनके शिव कोई नहीं है। मैं अपने चाचा के पास ही रहता हूँ और वही मुझे खाने के लिए दो टाइम खाना देते हैं। इसी कारण मैं उनके बच्चों को देखभाल करता हूँ। यदि मैं उनके बच्चे की देखभाल नहीं करूंगा तो वह मुझे दो टाइम का खाना भी नहीं देंगे और क्या पता मुझे घर से भी निकल दें। इसी वजह से उनके बच्चे को देखता भी हूँ और पढ़ने भी जाता हूँ। फिर पत्रकारों ने अंकुश से कहा कि अगर आपको एक मौका मिले तो आप क्या बनना चाहोगे तो अंकुश ने मुस्कुराते हुए कहा कि भैया अगर मुझे एक मौका मिले तो मैं टीचर बनना चाहूँगा और गरीब बच्चों को पढ़ाना चाहूँगा।

विवेक का परिवार: पिता के नशे के कारण छिपकर जीवन की जंग

बालकनामा रिपोर्टर सरिता, बातूनी रिपोर्टर विवेक

विवेक अभी मात्र 11 वर्ष का है और अपने घर के वातावरण से बहुत परेशान है। विवेक ने बताया कि मेरे पापा दारू का नशा करते हैं और सबको मारते-पीटते हैं । वह घर के समान को बेच कर उन पैसों से दारू पीते हैं। एक दिन मम्मी पापा की भयंकर लड़ाई की वजह से मम्मी हम तीनों भाई-बहन को लेकर दूसरी जगह रहने लगी और पापा झुग्गी के किराया न देने की वजह से गाँव वापस चले गए। वह मेरी मम्मी और हम सभी को खोजते रहे, लेकिन हम उनको नहीं मिले। पापा के गलत व्यवहार के कारण अब हम उनसे

छिपकर रहते हैं। मेरी मम्मी बिल्डिंग में काम करने जाती हैं और हमें पढ़ा भी रही हैं। मेरे से दो छोटी बहन होने के कारण मुझे मम्मी के कामों में हाँथ बटाना होता है। फिर चेतना एनजीओ में मैं पढ़ने जाता हूँ। मेरा दाखिला स्कूल में होने वाला है। फिर मैं पढ़ने जाऊंगा और अपना सपना पूरा करुँगा और मम्मी का नाम रोशन करूँगा।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

Scanned with OKEN Scanner

पढ़ाने के नाम पर फोन पर समय बिताने वाली अध्यापिका के कारण स्कूल से 25 बच्चों ने कटवाए अपने नाम

ब्यूरो रिपोर्ट

नोएडा के पास की झुग्गी बस्तियों में पत्रकार पंहुचे और कुछ बच्चों से बात की तो बच्चों ने बताया कि भैया मुझे काफी दुख है कि हमने स्कूल जाना छोड़ दिया है। यह बात सुनकर पत्रकारों ने बालक से पूछा ऐसा क्या हुआ जिसके कारण आपने स्कूल जाना छोड़ दिया। बालक ने बताया पहले मैं अपने गांव में रहता था, लेकिन गांव में काम न होने के कारण पिताजी अकेले नोएडा आ गए और वह कुछ साल यहां अकेले रहे। यहां पर उन्हें खाना बनाने और घर के काम करने में दिक्कत आ रही थी, जिसके कारण हमारी माताजी और हम भी नोएडा पिताजी के पास आ गए। कुछ दिन झुग्गी बस्ती में रहे और उसके बाद हम किराए के मकान में रहने लगे। पिताजी ने मेरा और मेरे भाई का दाखिला प्राइवेट स्कूल में करवा दिया। हम दोनों रोजा स्कूल जाया करते थे। स्कूल में पहले अध्यापक, अध्यापिका बच्चों की पढ़ाई पर अच्छे से ध्यान दिया करते थे, लेकिन जैसे ही स्कूल में अध्यापक अध्यापिका बदलते चले गए वैसे ही पढ़ाई समझने में काफी परेशानी होने लगी। अब जो हमारी कक्षा में हमारी अध्यापिका हैं वह बच्चों की पढ़ाई पर अच्छे से ध्यान नहीं देती हैं। वह पूरे दिन में एक पाठ का कार्य ब्लैक बोर्ड पर लिखवा देती हैं और फिर सारे बच्चे इस कार्य में लग जाते हैं और अध्यापिका अपने फोन में लग जाती है। बच्चों ने काम किया या नहीं किया, बच्चे याद कर रहे हैं या नहीं कर

रहे और बच्चों को समझ में आया या नहीं आया, इन सब से अध्यापिका को कुछ नहीं लेना। जिसके कारण हमें यह देखकर अच्छा नहीं लगा और हमने यह बात अपने माता-पिता को जाकर बताई। जिसके कारण पिताजी ने स्कूल से नाम कटवा दिया। हम ही एक बच्चे नहीं थे जिन्होने स्कूल से नाम कटवाया। हमारे बाद 24 बच्चों ने भी उस स्कूल से नाम कटवा लिया। बच्चों ने जब अध्यापिका की शिकायत प्रिंसिपल सर से की तो प्रिंसिपल सर तुरंत क्लास में पढ़ाई ठीक से हो रही हैं या नहीं यह चेक करने आ जाते। फिर प्रिंसिपल सर के जाने के बाद क्लास की अध्यापिका उस बच्चों को बहुत डांटती और उस पर और ध्यान नहीं देती। जिसके कारण हमने उस स्कूल से नाम हटवाना ही ठीक समझा।

मौसम की मार से परेशान बच्चे: बीमारी ने पढ़ाई और पारिवारिक आर्थिक स्थिति को लगाया झटका

बालकनामा रिपोर्टर असलम

जब हमारे बालकनामा पत्रकारों ने बच्चों से मौसम बदलने से क्या प्रभाव पड़ रहे हैं, उस पर बात की तो एक बच्चे शिवम ने बताया कि भैया मौसम बदलने से हमें बहुत सारी परेशानियां आ जाती हैं। क्योंकि जैसे-जैसे मौसम बदलता है तो हम भी मौसम के अनुसार ढलने की कोशिश करते हैं, लेकिन ढल नहीं पाते तो हम बीमार हो जाते हैं। रोहित ने बताया कि भैया मौसम बदलने से हमें बुखार लग जाता है, जिससे हमें डॉक्टर के पास जाना पड़ता है। डॉक्टर के पास जाने के लिए बच्चों के पास ज्यादा पैसे नहीं होते हैं, क्योंकि ये रात में कमाते हैं और दिन में उसी से अपना पेट पालते हैं। जिसके कारण उनके पास और दूसरी चीजों पर खर्च करने के लिए पैसे नहीं होते हैं। इसलिए अगर इनको बुखार या कोई बीमार हो जाए तो यह देसी नुस्खे का ही प्रयोग करते हैं। अस्पताल जाने से भी इन बच्चों को डर लगता है। आजकल अस्पताल में बहुत ज्यादा पैसे लगने के कारण बच्चों के मां-बाप डर जाते हैं कि अगर अस्पताल जायेंगे तो इनका ज्यादा पैसा लग जाएगा, जिसके कारण यह देसी नुस्खे का ही प्रयोग करके खुद को ठीक कर लेते हैं। राकेबुल ने बताया कि भैया मुझे भी कुछ दिन से बहुत ज्यादा बुखार हो गया था, जिससे कि मैं अपनी पढ़ाई भी नहीं कर पा रहा हूँ। मैं स्कूल भी नहीं जा पाया और अगर मैं स्कूल नहीं जाऊंगा तो हमारी कक्षा की अध्यापक हमें बहुत डाँटेंगी। अध्यापिका बोलती हैं कि बुखार एक दिन होता है और तुम छुट्टी तीन दिन की लेते हो और अध्यापक हमारे ऊपर फाइन भी लगाती हैं। मौसम बदलने के कारण हमारे इधर बहुत से बच्चों को बुखार हुआ है, जिसके कारण हम बच्चे स्कूल से छुट्टी कर लेते हैं। दीपक ने हमें बताया कि भैया मेरे यहां मौसम बदलने से पानी की कमी के कारण बहुत से बच्चों में प्लेटलेट कम हो जाती है और प्लेटलेट कम होने के कारण इन बच्चों को टाइफाइड जैसी बड़ी बीमारियों से जूझना पड़ता है। इन बीमारियों से इन बच्चों की पढ़ाई का और अपने माता-पिता की आज तक की कमाई का, दोनों का नुकसान झेलना पड़ता है।

बदलते मौसम का प्रभाव: कामकाजी बच्चों के स्वास्थ्य पर असर

रिपोर्टर,हंसराज सरिता असलम किशन

हर छह महीने में मौसम बदलता रहता है। जैसे -जैसे मौसम बदलता है, वैसे ही सड़क पर काम करने वाले बच्चों की समस्या बढ़ती चली जाती हैं। बदलते मौसम में किन-किन परेशानियों का वह सामना कर रहे हैं, चलिए इस कहानी के माध्यम से जानते हैं। गुड़गांव में रह रहा परिवर्तित नाम रोहित ने बताया हमारे घर के सामने की मार्केट में अधिकतर बच्चे खिलौने आदि बेचकर अपने घर का खर्चा चलाते हैं। इस समय पर धूप इतनी तेज होती है कि उसको नजरअंदाज करते हुए बच्चे खिलौने बेचने हैं। इतनी तेज धुप के कारण बच्चे बीमार पड़ रहे हैं। इन बच्चों के पास इतने पैसे नहीं रहते कि यह जल्द से जल्द अपना इलाज करा पाए। दिल्ली में रह रही 13 वर्ष की बालिका ने बताया कि वर्तमान में मौसम इतना बदल रहा है कि अचानक से समझ में नहीं आता कभी अधिक गर्मी हो जाती है तो कभी एकदम से मौसम ठंडा हो जाता है। यही मौसम बीमारी का कारण है और इससे हमें खांसी, जुकाम आदि हो रहा है। जयपुर में रह रहा 10 वर्ष के बालक ने बताया कि हमारे आसपास में कई पार्क हैं, जहां पर कई बच्चे पार्क में खेलते रहते हैं। एक दिन हम भी पार्क गए और हमने देखा कि उस पार्क में एक 9 वर्ष का बालक एक व्यक्ति से खाने की भीख मांग रहा था। उसने बच्चे को वहां से धमका कर भगा दिया और वह बालक निराश होकर दूसरे आदमी के पास पहुंचा। तो मैंने वहां पर जाकर उससे पूँछा कि वह ऐसा क्यों कर रहा है तो बालक ने बताया मेरी माता नहीं है और पिता कुछ काम नहीं करते इस कारण मुझे ऐसे अपना पेट भरना पड़ता है तो मैंने उसे अपना कुरकुरा, चिप्स,आदि दे दिए। नोएडा में रह रहे दिलीप ने बताया कि हम जिस झुग्गी बस्ती में रहते हैं वहां बदलते मौसम में कभी-कभी इतनी तेज धूप रहती है कि हमारी झुग्गी की टीन बहुत गरम हो जाती है कि झुग्गी के अंदर सांस लेने में तकलीफ होती है और पानी इतना गर्म हो जाता है कि हम उसको पी भी नहीं पाते। हम आसपास में बिक रही बर्फ 5 से 10 रूपए में खरीद कर ठंडा पानी करके तब पानी को पीते हैं। यदि हम वही गर्म पानी पी लेते हैं तो उससे हमारी प्यास नहीं बुझती। गुड़गांव में रह रहे राहुल ने बताया कि बदलते मौसम के कारण अधिकतर बड़े एवं बच्चे दिन पर दिन बीमार पड़ते जा रहे हैं। बच्चों की परीक्षा भी शुरू हो गई है, लेकिन मौसम बदलने के कारण शरीर में ढीलापन, जुखाम, खांसी, बुखार आदि के कारण बच्चे बहुत परेशान हो रहे हैं। बच्चे चाहते हैं कि वो किसी कारण से स्कूल की छुट्टी ना करें, लेकिन बीमार होने के कारण बच्चों को छुट्टी करनी पड़ रही है।

नोएडा में पानी की सप्लाई कर रहे 16 वर्ष के अरविंद ने बताया कि मैं हर जगह पानी देने के लिए जाता हूँ और एक पानी की बोतल 20 लीटर की होती है। मुझे हर घर में अपनी बोतल उठाकर उससे दूसरी बोतल में पानी डालना पड़ता है। धूप इतनी तेज हो रही है कि पानी सप्लाई करने का मन नहीं करता और जब रिक्शा चलाता हूं तो चक्कर भी आते हैं। पर पूरे दिन पानी बेचकर मालिक को जितने पैसे में बात हुई होती है, उतने पैसे देने पड़ते हैं। यदि हम उतना काम नहीं कर पाए तो हमें अपनी तरफ से वह पैसे देने पड़ते हैं। दिल्ली की रेल पटरी के पास में रह रहे 17 वर्ष के बालक ने बताया कि बदलते मौसम में इतनी गर्मी पड़ रही है कि हर किसी को इसे सहन करना बहुत मुश्किल हो रही है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ रहा हूँ। मेरे घर में बहुत गर्मी लगती है, लेकिन जब हम और आसपास के बच्चे स्कूल जाते हैं तो पंखा चलने के बाद भी गर्मी महसूस होती है और पसीना भी आता रहता है।

कुछ बच्चे साइकिल से स्कूल चले जाते हैं और कुछ बच्चे पैदल भी स्कूल जाते हैं। स्कूल की दूरी एक से डेढ़ किलोमीटर है और जब बच्चों की स्कूल से छुट्टी होती है तो उस समय काफी तेज धूप रहती है और इस धूप में आकर बच्चे तुरंत ठंडे पानी से नहाने लगते हैं और जिस कारण गरम ठंडा होने के कारण बच्चे बीमार पड़ रहे हैं। दिल्ली की झुग्गी बस्ती में रह रही तमन्ना ने बताया कि बदलते मौसम में बीमार पड़ना तो आम बात है और जिस झुग्गी बस्ती में मैं रहती हूँ वहां एक एक मोहल्ला क्लीनिक है। जहां पर बीमार व्यक्ति एवं बच्चों का मुफ्त में इलाज होता है। इस बस्ती में रहने वाले अधिकतर लोग इस क्लीनिक पर ही निर्भर हैं। जब भी यह लोग बीमार पड़ते हैं तो इसी क्लीनिक में आकर अपना इलाज करवा लेते हैं। इस समय मौसम बदलता जा रहा है और बस्ती में अधिकतर बच्चे एवं बड़े बीमार पड़ते जा रहे हैं। कुछ दिनों से मोहल्ला क्लीनिक के कार्यकर्ता छुट्टी पर हैं और मोहल्ला क्लीनिक बंद है। जिसके कारण झुग्गी में अधिकतर लोग बीमार पड़ रहे हैं, लेकिन वह लोग इलाज नहीं करा पा रहे हैं। इन लोगों के पास इतना पैसा भी नहीं है कि यह बाहर इलाज करा पाएं।

माता-पिता ही बने जानवी के उज्जवल भविष्य की रुकावट

बालकनामा रिपोर्टर सरिता,
बातूनी रिपोर्टर जानवी

जानवी (परिवर्तित नाम) 12 वर्ष की है। वो चार भाई-बहन हैं, दो छोटे भाई और दो बहने। जानवी सबसे बड़ी बहन है और छोटी बहन स्कूल पढ़ने जाती है। दोनों भाई घर पर ही रहते हैं और वह भी घर पर ही रहती है। उसके मम्मी पापा कम पर जाते हैं इसलिए वह अपने छोटे भाई को संभालने के लिए घर पर ही रहती है। उसके माता-पिता उसको स्कूल नहीं भेजते हैं। उसकी मम्मी उससे कहती हैं कि तू अपने दोनों छोटे भाईयों को संभालो स्कूल जाने की कोई जरूरत नहीं है और पढ़ाई लिखाई से क्या ही होता है। बड़ी होकर तुझे घर का काम और अपनी ग्रहस्ती ही तो संभाली है। लेकिन जानवी का मन करता है कि वह पढ़ लिखकर एक कामयाब इंसान बनें और खूब पैसा कमाएं ताकि वह अपने आने वाले भविष्य को संवार सके। जानवी ने पांचवी तक पढ़ाई की है और आगे पढ़ना चाहती है। लेकिन उसके अपने छोटे भाईयों के कारण उसे स्कूल नहीं भेजा जाता। हमारे बालकनामा रिपोर्टर सरिता दीदी ने जानवी को अपने चेतना एनजीओ के कांटेक्ट पॉइंट के बारे में बताया कि हमारे कांटेक्ट पॉइंट पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों का दाखिला कराया जाता है और उनको पढ़ाया भी जाता है। अगर तुम चाहो तो वहां आकर पढ़ाई कर सकती हो।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

Scanned with OKEN Scanner

7 वर्ष की छात्रा स्कूल से घर जाते समय गायब, बेहोश करके उसके साथ अनैतिक व्यवहार

ब्यूरो रिपोर्ट

नोएडा के हबीबपुर झुग्गी बस्ती के बच्चों के साथ बढ़ते कदम की मीटिंग के दौरान पत्रकारों ने सभी बच्चों की समस्याओं को जानने का प्रयास किया। 14 वर्ष की रजनी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भैया कुछ दिन पहले हमारे ही स्कूल से एक बालिका को किडनैप कर लिया गया था और बहुत ढूंढने के बाद वह बालिका मिल पाई थी।

इस कहानी से संबंधित और जानकारी के लिए पत्रकारों ने विस्तार से बच्चों से इस विषय पर बात की तो रजनी ने बताया कि भैया हमारे ही स्कूल की एक 7 वर्ष की बालिका रोज अपने दोस्तों के साथ स्कूल जाती थी। एक दिन उस बालिका के दोस्त पहले ही निकल आए और वह बालिका स्कूल में ही रह गई। फिर वह अकेले स्कूल से आ रही थी, तभी उस बालिका को रास्ते में किसी अनजान व्यक्ति ने पकड़ लिया। उस बालिका के सभी दोस्त समय पर घर आ गए, लेकिन वह नहीं आयी। उसकी बहन को लगा कि कभी-कभी वह बालिका स्कूल से आते समय वह अपने दोस्तों के घर भी चली जाती थी और कुछ समय वहां रूककर फिर वह अपने घर जाती थी। उस दिन उसकी बहन ने भी यही सोचा कि वह अभी तक स्कूल से नहीं आई शायद अपने दोस्तों के घर गई होगी। खेल-खेलकर वह घर पर आ जाएगी। जब ज्यादा समय बीत गया और शाम हो गई और वह बालिका घर पर ना पहुंची तो उसको बहुत चिंता होने लगी। बालिका के माता-पिता सुबह से ही काम पर चले जाते हैं और शाम को सात-आठ बजे तक घर आते हैं।

जब उस बालिका के माता-पिता ने उसकी बहन से पूछा किअभी तक वह आयी नहीं है, कहां है? तो बालिका की बहन ने बताते हुए कहा वह अभी तक अपने दोस्तों के घर से नहीं आई है। एक बार आप उनके घर जाकर देख लीजिए। माताजी उस बालिका के सभी दोस्तों के घर उसे ढूंढने के लिए पहुँची तो कई बच्चों ने कहा कि आज वह हमारे यहां नहीं आई और वह स्कूल से भी लेट निकली थी। हम जल्दी अपने घर आ गए थे, वह हमारे साथ नहीं आई।

बालिका की माताजी उस स्कूल में और बड़े-बड़े कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों से भी मिलकर आयी, पर वहां पर भी वह नहीं थी। बालिका की माताजी ने स्कूल में भी फोन करके पता किया तो पता चला कि वह छुट्टी होने के बाद अकेले घर की और निकल गई थी। माता जी बहुत परेशान हो गई और फिर उन्होंने बालिका के पिताजी को बताया।

बालिका के पिताजी भी ढूंढने के लिए सड़कों पर निकल पड़े और बहुत समय तक ढूंढते रहे, लेकिन

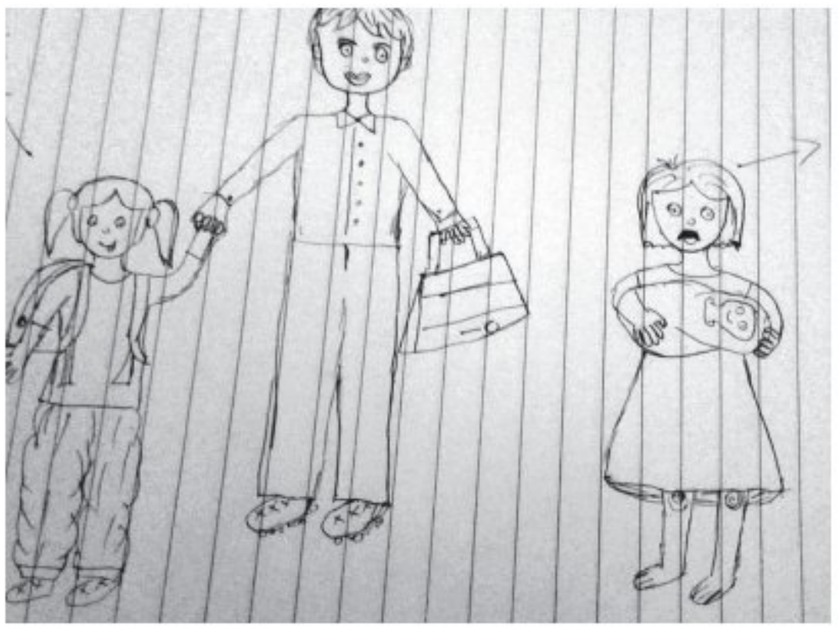

वह बालिका नहीं मिली। ढूंढते- ढूंढते अचानक से वह एक स्थान पर बैठी नजर आई। उसे देखते ही पिताजी उसके पास गए और उसको गले लगाया और फिर घर लेकर आ गए।

बालिका की माताजी एवं पूरा परिवार बहुत चिंतित हो गया था और उससे मिलने के बाद उनके चेहरे पर मुस्कान आई। माताजी ने जैसे बालिका को देखा वह काफी खुश हो गई। उससे कुछ सवाल करने लगी कि कहां गई थी, किसके साथ गई थी और समय से घर पर क्यों नहीं आई? लेकिन वह बालिका इतनी उदास और सहमी थी कि वह कुछ जवाब ही नहीं दे पा रही थी।

बालिका के पिताजी ने बालिका की माता जी को समझाते हुए कहा कि पहले उसे शांत कराओ और भोजन करवाओ, फिर जाकर कुछ सवाल करना। बालिका की माताजी ने बालिका को भोजन करवाया। कुछ देर आराम करने के बाद उससे पूँछा कि वह कहां पर गई थी।

बालिका की माता जी जब बालिका को शांत करवा रही थी तो उनकी नजर उसके गाल और होंठ पर भी पड़ी। उसके होठ बहुत सूजे हुए थे, और गाल पर कई प्रकार के घब्बे भी थे, जैसे किसी ने उस बच्ची को मारा हो। बालिका इतनी गुमसुम थी कि वह कुछ बोल नहीं पा रही थी और ऐसा लग रहा था किसी ने उसे कुछ दवाई खिलाकर उसके ऊपर अत्याचार किए हैं। बालिका की माताजी ने बार-बार वही सवाल करके उसे जानने का प्रयास किया कि उसके साथ हुआ क्या है। बालिका ने बताया कि मैं स्कूल से लेट निकली थी। मेरे जितने भी दोस्त हैं, वह सब पहले निकल चुके थे। मैं रास्ते में आ रही थी कि अचानक से किसी अंकल ने मुझे पकड़ लिया और वह अपने साथ मुझे लेकर चले गए। उन्होंने मेरा मुंह भी दबा रखा था। मैं कुछ बोल नहीं बोल पा रही थी। अचानक से उन्होंने मुझे कोई बेहोश करने की दवाई सूँघा दी और फिर उसके बाद मुझे कुछ याद नहीं कि मेरे साथ क्या हुआ। जब मुझे होश आया तो मैं सड़क पर पड़ी थी।

काफी देर बाद मुझे पिताजी मिले और वह मुझे घर लेकर आ गए। बच्चों ने यह खबर को बताते हुए यह भी कहा कि हम भी काफी डरे हुए हैं। स्कूल के आसपास में काफी लोग आते जाते हैं। पर हम किस पर विश्वास कर ले कि वह कौन है और कौन नहीं। क्या वह हमें पकड़ने आया है या वह रास्ते से निकल रहा है। हम यही चाहेंगे कि माता-पिता बच्चों पर भी ध्यान दे और उन्हें अकेले आने जाने न दें।

तोड़फोड़ से बढ़ा सड़क और कामकाजी बच्चों में डर का माहौल

स्पोर्टर राजकिशोर

जलवायु टावर कांटेक्ट पॉइंट की झुग्गियों के लोगों ने बालकनामा पत्रकार को बताया कि चारों तरफ झुग्गी तोड़ने की चर्चा हो रही है। सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी झुग्गी तोड़ने के बारे में ही बातचीत कर रहे थे। इसके कारन चारों तरफ का डर माहौल है।

जब पत्रकार ने एक कालू नाम के लड़के से बात की तो उसने बताया कि कल टेंपो वाला माइक से यह बोल रहा था कि 15 तारीख तक आप झुग्गी को खाली कर दें नहीं तो आपके सामान की जिम्मेदारी आपकी होगी।

हम आपको बताते हैं जलवायु टावर के सेक्टर 54 के आगे बहुत बड़ी मलिन बस्ती है। इस बस्ती में सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने परिवार के साथ रहते हैं। यह बच्चे कचरा बिनने, भीख मांगने और रेड़ी लगाने का काम करते हैं। इन बच्चों के परिवार के लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं।

जब हमने रश्मि खातून से बात की तो उसने बताया कि हर 3 महीने में यहां तोड़फोड़ होती रहती है। हम पहले ही किराया दे देते हैं, लेकिन फिर भी बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। मैं कोठियां में बर्तन साफ करने और झाड़ू लगाने जाती हूं। मेरे दो बच्चे हैं जो स्कूल में पढ़ने जाते हैं, लेकिन अब इस तोड़फोड़ की खबर ने हमें परेशानी में डाल दिया है। हर तीसरे से चौथे महीने तोड़फोड़ की वजह से हमें पलायन करना पड़ता है। यहां का जीवन काफी खराब है।

झुग्गी के अंदर पानी की भी समस्या है, लेकिन इन सबके बावजूद किराया भरने पर भी समय-समय पर उनकी झुग्गियां तोड़ी जाती हैं।

सरकार से बालकनामा अखबार के द्वारा हम अनुरोध करते हैं कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों पर इस तरह परेशानी व समस्या नहीं डाली जाए, क्योंकि यह भी पढ़ लिखकर समाज की मुख्यधारा में आना चाहते हैं और सामाजिक विकास में अपना योगदान देना चाहते हैं।

बच्चे स्कूल में कर रहे हैं यह कारनामा

ब्यूरो रिपोर्ट

अच्छे और बुरे का फर्क हर किसी को मालूम होता है, लेकिन गलत संगती में पड़कर बच्चे क्या-क्या कारनामे करते हैं, यह आप सोच भी नहीं सकते हैं।

दिल्ली में रह रहे 14 वर्ष के बालक ने बताया कि भैया बच्चे रोज स्कूल जा रहे हैं। इस समय बच्चे स्कूलों में बिगड़ते जा रहे हैं। बच्चों को घर से अन्य काम और चीज के लिए पैसे मिलते हैं तो बच्चे उन पैसों का नशा खरीद लेते हैं और स्कूल में नशा लेकर आते हैं। वो स्कूल की शौचालय के पास जाकर नशा करते हैं। मेरी ही आठवीं कक्षा का एक बालक है जो 16 वर्ष का है। वह रोज गुटखा, सिगरेट, तंबाकू आदि लेकर आता है। कभी वह उसे जुराब में दुबका लेता और कभी बैग में। लेकिन अधिकतर बच्चों को पता रहता है कि कौन बच्चा क्या कर रहा है।

एक दिन 17 वर्ष का बालक शौचालय की ओर खड़ा सिगरेट पी रहा था। क्लास के दूसरे बालक ने यह देख लिया और बालक ने आकर तुरंत अध्यापिका को बताया। अध्यापिका ने उस बालक से पूँछा, लेकिन वह झूठ बोलने लगा। अध्यापिका ने उसे डांट-फटकार कर बैठा दिया। स्कूल की छुट्टी होने के बाद जिस बालक ने शिकायत की थी, उस बालक को नशा करने वाले बालक ने पकड़ लिया और उसे मारने लगा। उसने हाथ, पैर से उसको खूब मारा, लेकिन किसी ने कुछ नहीं कहा। वह बालक इतना आक्रामक हो गया कि उसने प्रकार से उसको मारने लगा तो कुछ लोगों ने उसे बचाया और उनकी लड़ाई बंद करवाई। उस बालक के बहुत खरोच आ गई थी। उस बालक ने अगले दिन अध्यापक से शिकायत की और फिर उस नशा करने वाले बालक के माता-पिता को बुलाया गया और उसे स्कूल से निकाल दिया गया। अब वर्तमान में वह बालक स्कूल में नहीं पड़ता है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

Scanned with OKEN Scanner

गंदगी के कारण सड़क एवं कामकाजी बच्चे पड़ रहे हैं बीमार

बालकनामा रिपोर्टर सरिता
बातूनी रिपोर्टर रिमझिम

गोगा कॉलोनी कांटेक्ट पॉइंट पर जब पत्रकार ने विजिट किया तो रिमझिम नाम की एक बच्ची से बात करने पर उसने बताया कि हमारे इधर बढ़ती गंदगी के कारण बच्चे बीमार पड़ रहे हैं। डेंगू , मलेरिया जैसी बीमारी फैल रही हैं और सबको हॉस्पिटल में ड्रिप चढ़ रही हैं। दूषित भोजन, दूषित पानी पीने से सड़क एवं कामकाजी बच्चे बीमार पड़ रहे हैं। क्योंकि उन्हें स्वच्छ भोजन और स्वच्छ पानी नहीं मिल रहा है। वह दिन पर दिन और ज्यादा बीमार पड़ रहे हैं।

बीमारी के कारण कुछ बच्चों की तबियत इतनी ज्यादा बिगड़ रही हैं कि उनके मरने तक की भी नौबत आ गयी है। पानी भी दूषित हो रहा है, जिसको पीने से और खाना पकाने से हम बीमार पड़ रहे हैं। पानी टंकी में काई जमी हुई है और छोटे-छोटे कीड़े भी पड़ गए हैं। मजबूरी के कारण हमें वह पानी पीना पड़ता है। हमारे झुग्गी के ठेकेदार टंकी की सफाई भी नहीं करवाते हैं, जिसके कारण टंकी में कई जम जाती है और कीड़े उत्पन्न हो जाते हैं। हमारी झुग्गी के बाहर मकान वाले लोग आकर कूड़ा फेंक जाते हैं, जिससे दिन पर दिन गंदगी बढ़ती जा रही है। यहां पर कूड़ा का ढेर इतना बढ़ गया है कि हम इसकी सफाई भी नहीं कर सकते हैं। सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अनुरोध है कि उनकी समस्या का समाधान हो, ताकि वो भी सफाई में रह सकें और स्वस्थ भोजन एवं स्वास्थ पानी पी सकें और वो बीमार न पड़ें।

वजीराबाद ठेके के पास कूड़ा जमा होने से परेशान लोग

बच्चों के स्वास्थ्य पर बढ़ता प्रभाव

रिपोर्टर राज किशोर

बालकनामा पत्रकार ने वजीराबाद के पास की रेड लाइट के पास में रहने वाले बच्चों से बात करके पूछा कि आपकी समस्या क्या है ? बच्चों ने बताया कि जीरो बार ठेके के पास कूड़ा जमा होने के कारण हमें बहुत परेशानियां होती है। कूड़ा जमा होने से बहुत बदबू भी आती है जिसके कारण हम सभी लोग बहुत परेशान हैं। पत्रकार जब उस ठेके के पास गए तो देखा कि वहां कुछ बच्चे रेड लाइट पर पेंसिल, कॉपी, किताब आदि सामान रेड लाइट पर बेज रहे थे तो पत्रकार ने उनसे पूछा कि आप यह काम क्यों करते हो? बच्चों ने बताया कि भैया हमारे यहां कोई कमाने वाला नहीं है इसलिए हम पेन, किताब आदि बेचते हैं। पत्रकार ने उनसे कहा कि आप पढ़ाई करना नहीं चाहते हो उन्होंने जवाब दिया कि भैया मैं तो पढ़ाई करना चाहता हूं, लेकिन हमारे पास इतने पैसे नहीं है इसलिए हम पढ़ाई नहीं कर सकते। तो पत्रकार ने उन्हें बताया कि हमारी एक चेतना संस्था है जो गरीब बच्चों को पढ़ाती है तो आप भी सुबह या शाम को इस एनजीओ के कांटेक्ट पॉइंट पर आकर पढ़ाई कर सकते हो। इससे आपकी पढ़ाई भी हो जाएगी और आपका घर का गुजारा भी हो जाएगा। तो बच्चों ने कहा कि भैया मैं जरूर जाऊंगा पढ़ने के लिए और साथ ही मैं काम भी करुंगा जिसके मेरे घर का गुजारा भी हो जाए और मैं पढ़ भी जाऊं।

अंशिकाः अपने साथ हो रहे गलत व्यवहार से असुरक्षित

बालकनामा रिपोर्टर सरिता, बातूनी रिपोर्टर अंशिका

12 वर्ष की अंशिका अपने साथ हो रहे गलत व्यवहार से बहुत परेशान है। जब उसके पापा- मम्मी काम पर चले जाते हैं तो वह घर पर अपनी बड़ी दीदी के साथ रहती है। शाम का खाना बनाने के लिए घर पर सब्जी नहीं होने पर जब वह दोपहर में सब्जी लेने गली में जाती है तो सब्जी वाला उसे गलत तरीके से छूता है। सब्जी वाले का यह चूना अंशिका को बिलकुल भी अच्छा नहीं लगता है। वह अपनी मम्मी- पापा को डर के कारण यह बात नहीं बता पाती है। उसने सिर्फ अपनी बड़ी दीदी को ही यह बात बताई है। बहनो को इस बात का डर लगता है कि यदि मम्मी- पापा को सब्जी वाले के बारे में बताएंगी तो यह सब सुनकर उनको मारेंगे। इसलिए वह चुपचाप ही रह जाती हैं। एक दिन मुझे उसकी दीदी ने यह सब बात बताई कि उसकी बहन अंशिका घर से बाहर निकलने में डरती है और अपने आपको असुरक्षित महसूस करती है। स्कूल के रास्ते में भी कभी-कभी सब्जी वाला मिल जाता है तो वह कभी-कभी स्कूल पढ़ने भी नहीं जाती है। अंशिका अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रही है और डर-डर के जी रही है। उसकी कोई मदद भी नहीं कर पा रहा है।

गलत संगति के कारण बच्चे कर रहे हैं चोरी और नशीले पदार्थों का सेवन

बालकनामा रिपोर्टर सरिता

जब पत्रकार ने गोगा कॉलोनी कांटेक्ट पॉइंट की विजिट की तो वहां कुछ बच्चों ने पत्रकार को बताया कि हमारी झुग्गी में कुछ बच्चे हैं जो गलत संगती में पद गए हैं। वो बच्चे स्कूल जाते समय रास्ते में रुककर गटर का पाइप, रिंग चोरी करके बेचते हैं। उसे बेचकर जो पैसे आते हैं उससे वह नशा करते हैं। ये बच्चे घर पर स्कूल जाने का बोलकर जाते हैं, लेकिन स्कूल नहीं जाते हैं। वो रास्ते में चोरी और नशा करते हैं। इस काम में लगभग 3 से 4 बच्चे शामिल हैं और इनकी उम्र 10 से 12 वर्ष के बीच में है। जहां से यह लोग रिंग चोरी करते हैं वहां बहुत सारे रिटाय रिंग पड़े हुए हैं और वहां पर बहुत गंदगी भी है। फिर भी यह बच्चे उस गंदगी में जाकर उस रिंग को उठाकर बेच देते हैं। एक बार कुछ बच्चों ने उन्हें रिंग चोरी करते हुए देख लिया और उसके बारे में हमारी चेतना एनजीओ की मैडम को बताया। हमारी मैम उन बच्चों से बात करने गई और समझाया कि आप लोग यहां पर चोरी करने मत जाना। क्योंकि यह जिसकी जमीन है वह आप सभी को मार भी सकते हैं। गंदे रिंग को छूने से उन बच्चों उन बच्चों को हाथ में इन्फेक्शन भी हो गया और उनके हाथ में बहुत सारी फुंसी हो गयी है। हमारी मैम के समझाने से वह बच्चे अब पहले की तरह चोरी करने नहीं जाते हैं, बल्कि स्कूल जाते हैं। वह स्कूल में मन लगाकर पढ़ते हैं और स्कूल से आकर फिर चेतना एनजीओ सेंटर पर बच्चे पढ़ने आते हैं।

नशे के आदि पिता, दूर छुपकर रहने को मजबूर बच्चे

रिपोर्टर सरिता

हमारे देश में ऐसे तो बहुत सारे नशीली पदार्थ है जिसमें से दारू का नशा एक बहुत खराब नशा है ऐसे ही सड़क एवं कामकाजी बच्चों के पापा गलत संगति के कारण नशा की लत पकड़ लेते हैं और घर में अपने बच्चों और अपनी पत्नी पर गलत अत्याचार करते हैं और मारते-पीटते हैं एवं अपनी पत्नी की कमाई को अपने नशे में इस्तेमाल करते हैं यहां तक कि अपने घर के समान को बेचकर जुआ खेलते हैं एवं दारू पीते हैं जिससे परेशान होकर उनके बच्चे और पत्नी को मजबूरी में आकर उनसे दूर छुप कर रहना पड़ता है ।उनके पति उन्हें पागलों की तरह खोजते हैं जिससे वह लोग छुप कर रहते हैं। जिससे वह अपने बच्चों को बाहर खेलने भी नहीं भेजते हैं ताकि उनके पति को पता न चल जाए उसकी मम्मी कोठियों में झाड़ू पोछा एवं बर्तन का काम करती है और बच्चे को पढ़ने लिखने भी नहीं भेजते हैं यहां तक कि हमारे सेंटर पर भी उनके मम्मी नहीं भेजती है ताकि उनके पापा उन्हें पकड़ ना ले और जान ना ले जिस कारण बच्चे बहुत डरे रहते हैं और डर के मारे वह किसी से बोलते तक नहीं है और उनके पढ़ाई पर गलत असर पड़ता है उन बच्चों को पढ़ाई की उम्र में घर में कैदी बनाकर रहना पड़ता है यह समस्या हमारे सेंटर की एक लड़की ने बताएं की मेरे पड़ोस में यह सब घटना घटी है जो हमारे सेंटर पर पहले पढ़ती थी।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

Scanned with OKEN Scanner

लापरवाही के कारण हुई बालिका की मृत्यु

ब्यूरो रिपोर्ट

स्वस्थ रहने के लिए हम सभी को अपना ध्यान रखना पड़ता है। यदि हम अपना ध्यान नहीं रखेंगे तो हम बीमार पड़ जाएंगे और यह हमारे लिए एक समस्या भी बन सकती है। इसीलिए जब हम छोटी-छोटी बीमारियों पर ध्यान नहीं देते हैं तो वह एक दिन बड़ी बीमारी बन जाती हैं।

पश्चिम दिल्ली के शकूरपुर की बस्ती में पत्रकार बढ़ते कदम के 13 वर्षीय सदस्य से मिले। बालक ने पत्रकार को झुग्गी में रहने वाली एक बालिका की अचानक मृत्यु की घटना के बारे में बताते हुए कहा कि इस बालिका का परिवर्तित नाम खुशी था। वह 9 वर्ष की थी और तीसरी कक्षा में पढ़ाई कर रही थी। वह स्कूल से पढ़ने के बाद सेंटर पर भी पढ़ने के लिए आती थी। वह रोजाना स्कूल जाती थी, लेकिन मौसम बदलने के कारण वह बीमार पड़ने लगी। कुछ समय के लिए उसे बुखार रहता और फिर कुछ समय बाद बुखार उतर जाता। जब उसे बुखार आता तो उसके घरवाले उसे आसपास के मोहल्ला क्लीनिक और ऐसे ही डॉक्टरों के पास ले जाते और उसका इलाज करवाते रहे, लेकिन उसे कुछ आराम न पड़ा और दिन पर दिन उसकी तबीयत बिगड़ती चली गई। उसके गले के कौवे में सूजन आ गई और वह एक फोड़ा बन गया। जिस कारण बालिका कुछ दिन तक घर में रही, लेकिन दो दिनों के बाद गले में सूजन बढ़ती चली गई और जिसके कारण वह कुछ खा पी भी नहीं पा रही थी और ना कुछ बोल पा रही थी। जब उसकी तकलीफ बढ़ने लगी तो उसके माता-पिता उसे पास के हॉस्पिटल में ले गए और वहां पर बालिका को दिखाया। उसकी हालत देखकर डॉक्टर ने कहा कि उसे जल्द ही हॉस्पिटल में एडमिट करना पड़ेगा और इन्हें हर 2 से 3 घंटे में 12 घंटे तक एक इंजेक्शन लगेगा। यह सुनकर माता-पिता घबरा गए और

उन्होंने उसे हॉस्पिटल में एडमिट करने से मना कर दिया और फिर वह घर आ गए। पड़ोस के लोगों ने कहा कि पास में ही एम्स हॉस्पिटल है, बच्ची को वहां ले जाओ। माता-पिता उसको एम्स हॉस्पिटल लेकर गए। वहां पर मरीजों की इतनी भीग होने के कारण कर्मचारियों ने उनसे कहा कि आपको पर्ची लेने में ही दो से तीन महीने लग जाएंगे। इससे बेहतर है कि आप इन्हें किसी और अस्पताल में लेकर जाओ। जब माता पिता ने कर्मचारी के हाथ पांव जोड़े तब कर्मचारी ने 1000 रुपया लेकर बालिका को एडमिट किया। एडमिट होने के बाद एम्स में उसका इलाज शुरू हुआ। डॉक्टर ने उसके गले के कौवे का ऑपरेशन करके उसके गले के कोवे की अच्छे से सफाई की। ऑपरेशन के समय डॉक्टर को बालिका के गले को बगल से काटना पड़ा और जिसके कारण उसके गले से बहुत खून निकला और बालिका की हालत बिगड़ने लगी। जिसे देखकर डॉक्टर ने बालिका के घरवालों को सूचित कर दिया कि यह कुछ ही दिन तक जीवित रह पाएगी। अचानक जब रात के समय माताजी बालिका को खाना खिलाकर गयी तो उनके जाने के बाद रात में बालिका की तबियत बिगड़ती चली गई और बालिका की मृत्यु हो गई।

घर छोड, शिक्षा का सफरः बच्चे का सपना पूरा करने का संकल्प

बालकनामा रिपोर्टर

हरियाणा के पत्रकार असलम ने जब घसोला की झुग्गियों का दौरा किया तो बालकनामा पत्रकार को एक ऐसे बच्चे के बारे में पता चला जो अपने घर में लड़ाई होने के कारण दूसरों के घर में रहने के लिए जाता है। पत्रकार ने उस बच्चे से बातचीत की तो उस बच्चे ने बताया कि मेरे परिवार में मेरी माता जी, दो भाई और एक बहन हैं। बचपन में ही मेरे पिताजी के गुजरने के कारण हमें अपना गांव छोड़कर शहर में आना पड़ा। यहां आकर मेरी माता जी को दूसरों के घर में साफ-सफाई का काम करना पड़ता है। हमारी माताजी ने सरकारी स्कूल में हमारा एडमिशन करा दिया और हम भी पढ़ने लगें हैं। अच्छी पढ़ाई की तो स्कूल में भी हमारा नाम हुआ, लेकिन जैसे-जैसे हम बड़ी क्लास में आते गए हमारी माता जी के स्वभाव में भी बहुत बदलाव आने लगा। माताजी हमें कहने लगी कि तुम लोगों ने

अब बहुत पढाई कर ली है, अब काम करो। इसी कारण मेरे भाई ने तो आठवीं कक्षा से ही पढ़ाई छोड़ दी और काम पर लग गया। लेकिन मैंने दसवीं पास कर ली और सोच रहा हूँ कि आगे ग्रेडुएशन तक अपनी पढ़ाई पूरी करूँ। लेकिन माताजी से देखा ना गया और जैसे मैंने दसवीं पास की माताजी कहने लगी कि अब काम करो। वह मुझे रोज काम के लिए बोलती रहती थी। इसी कारण मैंने घर छोड़ दिया और अब मैं काम कर रहा हूँ और ओपन से पढ़ भी रहा हूँ। क्योंकि मेरी माताजी मुझे दिल्ली में काम करने के लिए बोलती थी और पढ़ने के लिए मना करती थी, इस कारण मेरा मन बहुत दुखी हो गया। इस बात को लेकर मेरे घर में रोज लड़ाई होती थी इसलिए मैंने घर ही छोड़ दिया।

कूड़े के ढेर से घरवालों गन्दगी से तंग, जीना हुआ दुःखद

ब्यूरो रिपोर्ट

जब बालकनामा के पत्रकार नोएडा सेक्टर 62 की झुग्गी बस्तियों के बच्चों से मिले तो पत्रकारों की नजर एक कूड़े के ढेर की तरफ पड़ी। उसे देखकर पत्रकारों ने बस्ती में रहने वाले बच्चों से इस विषय पर बात की तो झुग्गी की एक बालिका ने बताया कि कुछ दिनों से यहां पर लोगों ने रोज कूड़ा डालना शुरू कर दिया है। इसकी वजह से कूड़े में से बहुत गन्दी बदबू आती है। यह कूड़ा कबाड़ा फैक्ट्री, पेड़ पौधों के पत्ते, फ्लैट में से आता है।

पहले यह कूड़ा किसी दूसरे स्थान पर डाला जाता था। वह स्थान बहुत बड़ा मैदान था। वहां पर साफ सफाई करने वाले कर्मचारी उस मैदान में कूड़ा डालने आते थे। लेकिन दशहरे के कारण यह मैदान खाली करवा लिया गया है, क्योंकि हर साल यहां पर दशहरे का मेला लगता है।

इस कारण कार्यकताओं द्वारा यह निर्णय लिया गया कि कुछ दिन के लिए यह कूड़ा हमारी झुग्गी बस्ती के सामने डाला जाएगा। जब यह लोग यहां पर कूड़ा डालने के लिए आए तो पहले यह दूसरे के दरवाजे के सामने कूड़ा डाल रहे थे, तो उन लोगों ने वहां पर कूड़ा डालने से मना कर दिया। इसके बाद उन लोगों ने उस स्थान को छोड़कर दूसरे के दरवाजे के सामने पड़े खाली स्थान पर कूड़ा डालना शुरू कर दिया। और यह जहां पर उन्होंने कूड़ा डालना शुरू किया, वह स्थान हमारे दरवाजे के सामने ही है, लेकिन जब वन लोगों ने पहली बार वहां कूड़ा डाला, उस समय हमारे घर में कोई नहीं था और हम लोग भी स्कूल गए थे। जब हमारे घरवालों ने यह देखा तो उन्होंने कर्मचारियों से बात की। कर्मचारियों ने हमसे कहा कि कुछ दिनों में यह कूड़ा हट जाएगा, लेकिन अब तो दशहरा भी बीत गया है पर कूडा नहीं हटाया गया है। रोज कूड़ा डालने के कारण उसका बड़ा ढेर भी लग गया है। अब तो हमारी झुग्गी बस्ती में रहने वाले लोग भी अपने घर का कूड़ा इसी स्थान पर फेंक कर चले जाते हैं। कूड़े के कारण हमारे घर के आस-पास गन्दगी भी फैलती है और बदबू भी बहुत आती है। जब हम खाना बनाते हैं तो भी अचानक हवा के बदबू आ जाती है और जब खाने के लिए बैठते हैं तो भी बदबू के कारण खाना नहीं खाया जाता। हम यही चाहते हैं कि कर्मचारी जल्द से जल्द इस स्थान पर कूड़ा डालना बंद कर दें और इस स्थान से कूड़े का ढेर हट जाए।

चेतना संस्था की मदद से, कामकाजी बच्चों का हुआ स्कूल में दाखिला

रिपोर्टर राजकिशोर

जलवायु टावर के सामने वाली मलिन बस्ती का बालकनामा रिपोर्टर राज किशोर ने विजिट की और स्कूल जाने वाले बच्चों से मिले। रिपोर्टर राजकिशोर को यह जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसे पता चला कि बादशाह और शुभम जो पहले कभी इन झुग्गियों में कूड़े कचरा बिनने का काम करते थे, उनका चेतना संस्था की सहायता से पास के सरकारी स्कूल गवर्नमेंट मॉडल सनसिटी प्राइमरी में एडमिशन हो गया है। बादशाह और शुभम के साथ मोनू और अरमान ने बताया कि भैया हमारे स्कूल में गणित की प्रतियोगिता आयोजित की गई थी, जिसमें हमने

अपनी कक्षा में अच्छा प्रदर्शन करके ईनाम में ज्योमेट्री बॉक्स जीता है। यह चारों सड़क एवं कामकाजी बच्चे काफी उत्साह और जोश के साथ भरे हुए हैं।

जब पत्रकार ने उनसे पूछा कि स्कूल के अंदर और क्या-क्या होता है? तो बच्चों ने बताया कि स्कूल में पढ़ाई के साथ अलग-अलग एक्टिविटी कराई जाती हैं जैसे ड्राइंग करना,गेम खिलाना, बहार घूमने ले जाना। बच्चों को स्कूल में बहुत अच्छा लगता है। उनके स्कूल में बहुत पेड़-पौधे भी हैं। बच्चों ने बताया कि मैम भी हमें बहुत प्यार से पढ़ती हैं। दोपहर में हमें लंच मिलता है और स्कूल के हर कमरे में कूलर भी लगे हुए हैं। सड़क एवं कामकाजी बच्चे जो झुग्गियों के अंदर भीषण गर्मी में रहते हैं, उनको स्कूल में ने सिर्फ शिक्षा प्राप्त करने बल्कि अच्छा व्यवहार, भाषा का ज्ञान, नैतिक शिक्षा की भी जानकारी मिल रही है। अब सड़क एवं कामकाजी बच्चे स्कूल से शिक्षा प्राप्त करके अपने सपने को सरकार कर सकते हैं। सड़क एवं कामकाजी बच्चे जो शिक्षा की मुख्यधारा में आकर न सिर्फ अपने परिवार का बल्कि समाज देश की प्रगति में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार

पलायन के कारण बच्चे हो रहे शिक्षा से वंचित

बालकनामा रिपोर्टर -शबीर शा
बातूनी रिपोर्टर-अजय

बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने जयपुर की विभिन्न बस्तियों का दौरा किया नतीजतन जयपुर के फलां सड़क के किनारे बसे लगभग 20 झुग्गियों वाली कच्ची बस्ती में रहने वाले बच्चों से बात की और उनकी समस्या एवं अनुभव जानने का प्रयास किया तब एक लगभग 10 वर्षीय बालक ने बताया की हम पिछले 6 महीने से यहां पर इस कच्ची बस्ती में अपनी झुग्गी बनाकर रह रहे हैं और मूलरूप से चित्तौड़गढ़ के रहने वाले है। हमारे माता-पिता चित्तौड़गढ़ की कपासन मंडी से खजूर की पत्तियां लेकर प्रत्येक 6 महीने में अलग-अलग जगहों पर जाकर झाड़ू बनाकर बेचने का कार्य करते हैं अपनी समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए बालक ने बताया की फिलहाल हमारी सबसे बड़ी समस्या यह है की सड़क के किनारे रहने के कारण कुछ लोग हमें बहुत परेशान करते हैं क्योंकि कि झाड़ू बनाने में बहुत कचरा फैलता और वे लोग कहते हैं की अपनी झुग्गियों को यहां से हटाओ अन्यथा अच्छा नहीं होगा इस प्रकार वे हमें बहुत तिरस्कृत

करते है। जब बालकनामा रिपोर्टर ने पूछा की आप स्कूल नही जाते हो क्या? तब बालक ने बहुत ही उदासीनता के साथ कहा की स्कूल जाने का बहुत मन तो करता है लेकिन रोजगार के लिए प्रत्येक 6 महीने में एक शहर से दूसरे शहर पलायन करते रहने के कारण हमें किसी भी स्कूल में दाखिला नही मिलता। अब तो परिवार के साथ रहकर उनकी मदद करना और भाई - बहनों की देखभाल करना ही बस यही जीवन रह गया हैं। वास्तव में इस प्रकार की विकट परिस्थितियों में रहने वाले बच्चे अपने साथ कई प्रश्न लेकर हमारे सामने खड़े होते है की आखिर इन सब परिस्थितियों के लिए कौन उत्तरदायी है और ये बच्चे शिक्षा और समाज की मुख्यधारा से अभी तक क्यों वंचित है?

स्कूल की दूरी बनी पढ़ाई में रुकावट

बालकनामा रिपोर्टर- काजल
बातूनी रिपोर्टर-कार्तिक

वैसे तो सड़क एवं कामकाजी बच्चों का जीवन विभिन्न प्रकार के संघर्षों से भरा है ऐसे में यह संघर्ष और जटिल हो जाता है जब उनकी बस्ती से सबसे नजदीकी विद्यालय तीन-चार किलोमीटर दूर हो। बालकनामा रिपोर्टर काजल को जयपुर की एक कच्ची बस्ती के बारे में जानकारी मिली की स्कूल की दूरी और अभिभावकों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण बच्चे शिक्षा से वंचित हो रहे हैं इसकी जानकारी के लिए बालकनामा रिपोर्टर काजल ने बच्चों से बात की तो बालक प्रदीप (परिवर्तित नाम) ने बताया की हमारी बस्ती से विद्यालय लगभग 3 से 4 किलोमीटर की दूरी पर है और रास्ते में हाइवे का रोड़ भी पार करना होता है इसलिए अकेले विद्यालय नही जा पाता। मेरे माता-पिता दोनों सुबह से ही मजदूरी करने चले जाते है क्योंकि हमारे ऊपर बहुत कर्जा भी हो रखा है इसलिए विद्यालय आने-जाने के लिए रिक्शा, बस या किसी भी प्रकार के वाहन की व्यवस्था नहीं कर सकते और परिवार को आर्थिक तौर पर सहयोग करने के लिए मैं स्वयं भी कभी-कभी भीख मांगने, कूड़ा बीनना या जूते पॉलिश करने जैसे काम भी करता हूँ। वैसे तो मेरा मन भी स्कूल जाने के लिए काफी करता है परंतु काश! अगर कोई विद्यालय मेरी बस्ती के आसपास ही होता तो मैं अवश्य ही स्कूल जा पाता।

नशे के व्यापार में फंसा बचपन

बालकनामा रिपोर्टर -शबीर शा
बातूनी रिपोर्टर-गोलू

नशा न केवल आपके बचपन को बर्बाद कर सकता है बल्कि इसका असर आपके पुरे जीवनकाल पर पड़ता है और जब इसकी शुरूआत आपके बचपन से हो तो इसके परिणाम काफी गंभीर हो सकते हैं। हाल ही में बालकनामा रिपोर्टर शबीर को खबर मिली की जयपुर की एक कच्ची बस्ती में बच्चों को अनायास ही नशे के व्यापार में धकेला जा रहा है। इसी बीच शबीर की मुलाकात बस्ती में रहने वाले मोनू (परिवर्तित नाम) से हुई, जब बालकनामा रिपोर्टर ने मोनू से पूछा कि आप नशे के व्यापार में कैसे फंस गए? तब 12 वर्षीय मोनू ने बताया की घर की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण उसके चाचा ने उसे इस काम में लगा दिया और इस प्रकार बालक नशे की अमान्य खरीद फरोख्त संबंधित मुखबिरी (रैकी) का काम करने लगा। बातचीत के दौरान बालक ने बताया की वह गली में एक यथोचित स्थान पर बैठ जाता है और पुलिस पर नजर रखता है अगर पुलिस आती है तो वह भागकर अपने मालिक के यहां काम करने वालों को बता देता है जिससे वो नशे का सामान छुपा देते है। बालकनामा रिपोर्टर ने जब पूछा की इस काम को करने में आपको डर नही लगता क्या? तब मोनू ने कहा कि शुरू में डर लगता था पर अब नहीं लगता क्योंकि बस्ती में बहुत से बच्चे ये काम करते हैं और मेरे चाचा भी इस काम में मेरा साथ देते हैं। बालक ने आगे बताया की इस काम को करने से मुझे प्रतिदिन के 300 रू मिलते है लेकिन इसमें खतरा बहुत रहता है और कई विकट समस्याएं भी आती हैं। गर्मियों में धूप बहुत तेज पड़ती है और जहां मैं बैठता हूँ वहां पर छत नहीं है इसलिए सारे दिन धूप में रहना पड़ता है और पूरे दिन भर में केवल आधा घंटे के लिए खाना खाने की छुट्टी मिलती है, यह धंधा वैसे तो सुबह से लेकर देर रात तक चलता है परंतु देर शाम तक इस प्रकार के नशीले पदार्थों की मांग बढ़ जाती है। मोनू बताता है की वह मुखबिरी की खबर देने दौड़ता है तो कई बार जल्दबाजी में गिर भी जाता है ऐसे अस्वस्थ वातावरण में काम करते-करते बालक कई प्रकार से शोषण का शिकार होता है बालक की पूरी बस्ती मे नशे का मलिन जाल ऐसे बुना गया है जिसमें इन मासूम बच्चों का बचपन फँस के रह गया है।

मोबाईल की लत के कारण बच्चे पड़ रहे गलत संगत में

बातूनी रिपोर्टर - रामजी,
बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर हंसराज दिल्ली के शिवाजी पार्क एरिया में विजिट करने गया तो उन्हे वहाँ के बातूनी रिपोर्टर ने बताया कि इस एरिया में एक लड़का रहता है जिसका नाम विवेक (परिवर्तित नाम)है। वह 13 वर्ष का है और सातवी कक्षा में पढ़ता है। उसका दाखिला सातवी कक्षा में बहुत मुश्किल से हुआ था। वह रोजाना ही स्कूल जाता था वह स्कूल से पढ़ के आने के बाद रोजाना चेतना संस्था के सेंटर मे पढ़ने जाता था। उसके कुछ मित्र है जिनके पास मोबाइल फोन है और वह सभी अपना ज्यादातर समय फोन पर ही व्यतीत करते है। विवेक रविवार को अपने दोस्तो के साथ समय बिताता था और ऐसे में वह भी अपने बिगड़े हुए दोस्तो के साथ रहकर उनकी गलत संगत का शिकार होने लगा। धीरे धीरे वह भी पढाई छोड़कर अपना सारा समय फोन पर बिताने लगा जहाँ वो विडियो, गाने और अन्य साइट्स पर बिताने लगा। उसका अपने बड़ो के प्रति व्यवहार भी असम्मानजनक हो गया, वह अपने छोटे भाई बहनो को बिना किसी कारण पीटने लगा। एक दिन वह अपने दोस्त का फोन देख रहा था तो उसके दोस्त ने मजाक मजाक मे उसे धक्का दे दिया वह गुस्से से लाल होकर अपने घर गया और अपने माँ बाप को गंदी गंदी गाली देने लगा और उसने बोला की उसे एक फोन चाहिए उसके पिता जी ने मना कर दिया तो उसने कहा कि मैं अपने खाना नही खाऊंगा जब तक मुझे फोन नही मिलेगा। वह अपने माता पिता का इकलौता बच्चा है तो उसकी माँ ने उसका विरोध नही किया तो उसने पूरे 3 दिनो तक खाना नही खाया। उससे परेशान होकर उसके माता ने उसे एक स्मार्ट फोन दिला दिया। उसने स्कूल जाना बिल्कुल ही बंद कर दिया वह दिन भर अपने फोन में फ्री फायर नामक मोबाइल गेम खेलता रहता था और जब उसका फोन का रिचार्ज खत्म हो जाता तो वह अपने घर से पैसे चोरी कर के रिचार्ज करवा लेता है वह अब कभी भी स्कूल नही जाता है।

सीवरेज नाले के दूषित पानी से परेशान बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर-शबीर
बातूनी रिपोर्टर-नाजिर

जयपुर की एक कच्ची बस्ती में सीवरेज नालों से गंदा पानी सड़क एवं गलियों में बाहर बहने की जानकारी मिली तो स्थिति का जायजा लेने के लिए बालकनामा रिपोर्टर शबीर ने बच्चों से बातचीत की तो बालक राजू (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हमारी बस्ती में जगह-जगह पर सीवरेज का गन्दा पानी बहता रहता है। नालों की लंबे समय से सफाई नहीं होने के कारण अब तो गंदा पानी बस्ती की प्रत्येक गली में बहता रहता है जिससे हमको आने-जाने में

बहुत समस्या होती है और बहुत ही गंदी बदबू भी आती है। बस्ती के कुछ लोगों ने स्थानीय पार्षद को बार-बार शिकायत भी की लेकिन हमारी कोई सुनवाई नहीं हो रही है। कई बार तो गली में गंदा पानी इतना बढ़ जाता है कि हमें किसी दूसरे लंबे रास्ते से स्कूल जाना पड़ता है और कभी-कभी तो जब हमारे पास समय कम होता है तो फिर उस गंदे पानी के बीच में से भी निकल कर जाना पड़ता है। चुनाव के दौरान तो सभी नेता हमारी बस्तियों में आते हैं और बड़े-बड़े वादे करते हैं लेकिन अब तो आलम यह है की लगभग एक साल से स्थानीय पार्षद भी हमारी बात नहीं सुन रहे हैं।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार तथा अभिनव इमिग्रेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471

Scanned with OKEN Scanner